9869

श्री दुर्गा माँ आरती

॥ आरती श्री दुर्गा माँ जी की ॥

॥ ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ॥
॥ तुम को निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को ॥
॥ उज्जवल से दो नैना चन्द्र बदन नीको. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे ॥
॥ रक्त पुष्प दल माला कंठन पर साजे. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी ॥
॥ सुर-नर मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ कानन कुण्डल शोभित नासग्रे मोती ॥
॥ कोटिक़ चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ शुम्भ निशुम्भ विडारे महिषासुर धाती ॥
॥ धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ चण्ड – मुंड संहारे सोणित बीज हरे ॥
॥ मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे.ॐ जय अम्बे... ॥

॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥
॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ चौसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरु ॥
॥ बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भर्ता ॥
॥ भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति कर्ताॐ जय अम्बे... ॥

॥ भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी ॥
॥ मन वांछित फ़ल पावत सेवत नर-नारी. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ कंचन थार विराजत अगर कपूर बाती ॥
॥ श्रीमालकेतु में राजत कोटि रत्न ज्योति. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे ॥
॥ कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पावे. ॐ जय अम्बे... ॥

॥ इति दुर्गा माँ आरती सम्पूर्ण ॥